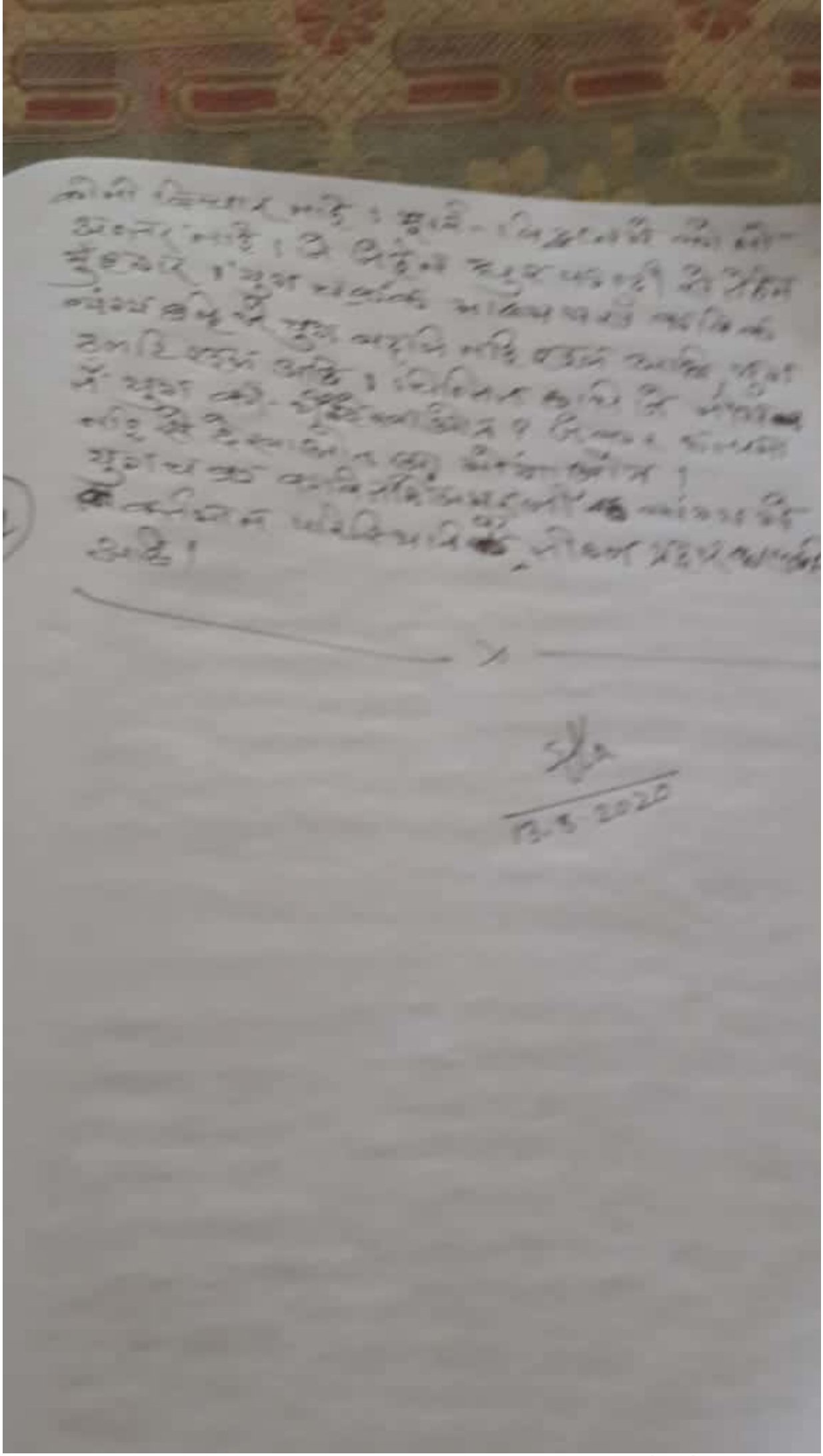

इन्टरमीडिएट XI–XII
आधुनिक भारतीय भाषा (मैथिली)

डॉ० [illegible]
अतिथि-प्राध्यापक, मैथिली
मिल्लत कॉलेज
दरभंगा

प्रश्न :- "युगचक्र" शीर्षक कविताक सारांश लिखू।

उत्तर :- "युगचक्र" शीर्षक कविताक रचयिता चन्द्रनाथ मिश्र "अमर" साहित्य, नाटक एवं कविता जगतमे प्रगतिवादी विचारधाराक साहित्यकार छथि। हिनक हास्य-व्यंग्य कविता सँ [illegible] ओ टेर-पोर [illegible] [illegible] स एकर कविता "युगचक्र" [illegible] छनि।

(1) प्रस्तुत कविता स्वतंत्रता प्राप्तिक बादक रचना थिक। स्वतंत्रताक बाद भ्रष्टाचार चरम पर पहुँचि गेल। भ्रष्टाचारक भरमार भए गेल। स्वयंभू नेता समाजक ठेका मे मलाइ सुनारि रहल अछि। जीकरा जनताक सुराहैत बढ़ुनी जान व्यापारी बनला, बढ़ुनी सहकारी-पत्रकार बनि बढ़ुनी जानि ने लिखब कैं रिक्शा रहल अछि। युगक युग परतारि रहल अछि।

ओ चतुर बुधियार कल सँ अपन धन अर्जन करए रहल अछि। ई सब चतुराई सँ कुर्सी पकड़ने गुडा-रोटी खाइत आधुनिक लोकक हृदय मे घर कैने अछि। [illegible] आहिंक उपदेश ओ दोसराक हेतु, स्वयं एकर विपरीत चरित्र रहैत छैक। मुदा अपना आगू कोनो बात नहि रहैत छैक। हुनका कोनो महानता [illegible] ओ अपन स्वार्थक हेतु दोसरा आगू [illegible] कोनो [illegible] नहि होइत छैक। [illegible] जे स्वतंत्रता आबि लोक उत्तरोत्तर भए गेल अछि। चोर-पैसाक

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
आहे।

13.5.2020